5:25 PM 0.0KB/s 4G 3G 30
9 b l j aarthik sap...

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आर्थिक सापेक्षता, चेतना का रूपान्तरण एवं धर्म जागृति से नव स्वस्थ समाज की संरचना

प्रो. बी. एल. जैन
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
जैन विश्व भारती संस्थान
लाडनूं, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों का समन्वित एवं संतुलित विकास किया जाना बहुत कठिन है। मनुष्य की चेतना को धर्ममय बनाना होगा, फिर ही नए समाज का निर्माण किया जा सकता है। अंधेरी गुफा में जब दीपक बुझ जाता है, तो व्यक्ति को कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता है। वैसे ही अर्थ में आसक्त मनुष्य को असमानता की खाई नहीं दिखाई देती है। सभी मनुष्यों को अपने विकास के लिए आर्थिक संसाधन आवश्यक है। आर्थिक आवश्यकता की संपूर्ति होने पर व्यक्ति को सुखानुभूति हो सकती है।इच्छा आकाश के समान अनन्त है। यह धार्मिक दृष्टि से व अर्थशास्त्रीय दोनों दृष्टियों से सत्य है। इच्छा का क्षेत्र आवश्यकताएँ से भी बड़ा है। सभी इच्छाएँ आवश्यकताएँ नहीं होती और सभी आवश्यकताएँ इच्छाएँ नहीं हो सकती है। इच्छा से आवश्यकता का क्षेत्र और आवश्यकता से माँग का क्षेत्र छोटा होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

मानव का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रहा है। इन चारों का समन्वित एवं संतुलित विकास किया जाना बहुत कठिन है। ऐतिहासिक एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य पर दृष्टिपात करें तो हमें यह दिखाई देता है कि प्राचीन समय में धर्म और मोक्ष की प्रधानता थी। अर्थ और काम गौण रूप में थे। आधुनिक समय में यह विपरीत रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। अर्थ और काम प्रधान रूप में तथा धर्म और मोक्ष गौण रूप में परिलक्षित हो रहा है। हम अर्थ के प्रति तथा भौतिक सुविधाओं के प्रति इतने आकर्षित हो रहे हैं कि हम मानवीय मूल्यों को विस्मृत तथा खत्म करते जा रहे हैं, क्योंकि हमारी चेतना के केन्द्र बिन्दु में अर्थ ही आच्छादित हो रहा है। उस अर्थ के कारण ही व्यक्ति में क्रोध, लोभ, अहंकार, प्रमाद बढ़ते जा रहे हैं तथा भूमि की अधिकतर वस्तुओं पर उसका स्वामित्व बढ़ता जा रहा है। यदि इसी असंतुलित ढंग से व्यक्ति का विकास होता रहेगा तो वह दिन भी दूर नहीं है जिससे अन्याय, अत्याचार, शोषण, राक्षस वृत्ति मनुष्य के अन्दर व्यापक रूप में समावेशित हो जायेगी। हमें उक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए आर्थिक सापेक्षता को व्यापक रूप में बढ़ावा देना है, ताकि इस पृथ्वी का हर मानव अहिंसक एवं शान्ति के साथ अपना विकास कर सकें। सापेक्षता में अर्थ के साथ धर्म भी जुड़ा हुआ है। हमें अपना आर्थिक विकास धर्म के साथ करना है। हम अपरिग्रह से परिग्रह में पदार्थ, धन, धान्य आदि का संग्रह करने में दौड़ रहे हैं। उसके बाद भी मन की तुष्टि, इन्द्रियों की तृप्ति नहीं दिखाई दे रही है। मनुष्य सत्यमेव जयते के स